

डॉ. जॉन ओसवाल्ट, निर्गमन, सत्र 7, निर्गमन 12-14

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जॉन ओसवाल्ट द्वारा निर्गमन की पुस्तक पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 7 है, निर्गमन 12-14।

आइए हम सब मिलकर प्रार्थना करें। इस दिन के लिए आपका धन्यवाद, पिता। सुंदर धूप के लिए धन्यवाद। ठंडी हवाओं के लिए धन्यवाद।

आप जिस तरह से हमें अपना प्यार दिखाते हैं, उसके लिए आपका धन्यवाद, और हम इसे धन्यवाद और खुशी के साथ स्वीकार करते हैं। प्रभु, आप हमारी हर चिंता को जानते हैं जो हम आपके पास लेकर आते हैं। हमारे जैसे लोगों से भरे कमरे में, कई मुद्दे हैं।

स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे, वित्तीय मुद्दे, परिवार के मुद्दे, और यह सूची बहुत लंबी है। आपका धन्यवाद कि आप इन्हें जानते हैं, आप इनकी परवाह करते हैं और आप इनसे निपटने के लिए आगे आ रहे हैं। हम, खास तौर पर आज शाम, अपने मित्रों, शासकों के लिए प्रार्थना करेंगे।

हम प्रार्थना करते हैं कि आप उन दोनों को स्पर्श करें, वह क्योंकि वह देखभाल करने वाली है और वह। उनके साथ रहो, प्रभु। हम आपसे प्रार्थना करेंगे कि इन दिनों में उन्हें जितना संभव हो सके उतना स्वस्थ करें।

उनके लिए आपका धन्यवाद, और हम उनके लिए आपकी सांत्वना की प्रार्थना करते हैं। आपके वचन का अध्ययन करने के इस अद्भुत अवसर के लिए फिर से धन्यवाद। एक बार फिर, हम आपसे प्रार्थना करते हैं, पवित्र आत्मा, आइए।

इसकी सच्चाई को हमारे सामने खोलिए। उस सच्चाई के लिए हमारे दिलों को खोलिए, और हमें उन लोगों के और करीब लाने में मदद कीजिए जिनकी आपको इन दिनों इस दुनिया में ज़रूरत है। आपके नाम पर, हम प्रार्थना करते हैं। तथास्तु।

ठीक है, हम अध्याय 12, श्लोक 43 से अध्याय 14 के अंत तक देख रहे हैं। यह, निश्चित रूप से, लाल सागर पार करने की घटना है, और यह बहुत ही उपयुक्त बात है कि हम पवित्र सप्ताह के सोमवार को इस अंश को देख रहे हैं, क्योंकि निर्गमन और पुनरुत्थान के बीच एक महान संबंध है।

बेशक, आपके पास ऊपरी कमरे में यीशु और फसह का भोज, ये सभी कारक हैं, इसलिए यहाँ हमारे लिए इस बारे में बात करना बहुत ही बढ़िया है। हम अध्याय 12 के अंत से शुरू करते हैं, और हमारे पास फसह के और भी नियम हैं। और इसलिए, मेरा आपसे सवाल है, आपको क्यों लगता है कि ये नियम अध्याय 12 में बाकी नियमों के साथ नहीं दिए गए थे? अध्याय 12, श्लोक 1 से 20 तक।

क्या आपके पास कोई विचार है कि इन नियमों को दूसरों से अलग क्यों रखा जाना चाहिए? हाँ, हाँ। कभी-कभी चीजों को फैलाना अच्छा विचार होता है। हाँ।

और उसके लोगों के बीच एक स्पष्ट अंतर था। आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। अगर आप उन आयतों को देखें, आयत 43, तो ये फसह के भोजन के नियम हैं।

कोई भी विदेशी इसे नहीं खा सकता। कोई भी गुलाम इसे नहीं खा सकता। कोई भी अस्थायी निवासी या मज़दूर इसे नहीं खा सकता।

श्लोक 48, तुम्हारे बीच रहने वाला कोई विदेशी जो प्रभु का फसह मनाना चाहता है, उसे अपने घर के सभी पुरुषों का खतना करवाना चाहिए। इसलिए, मुझे लगता है कि रूथ बिल्कुल सही है। हमारे पास पलायन है, अभी तक समुद्र पार नहीं हुआ है, लेकिन भूमि से प्रस्थान हुआ है, और हमें बताया गया है, यदि आप 1238 को देखें, तो कई अन्य लोग उनके साथ गए थे।

किंग जेम्स ने इसका शाब्दिक अनुवाद किया है, और इसे मिश्रित भीड़, लोगों का मिश्रण कहा है। वे लोग जो शायद सेमाइट थे, लेकिन जैकब के परिवार से नहीं थे। हो सकता है कि कुछ मिस्रवासी भी साथ गए हों।

उन्होंने देखा था कि यह परमेश्वर क्या कर सकता है, और उन्होंने सोचा कि शायद उसके पक्ष में होना एक अच्छी बात होगी। इसलिए, मुझे लगता है कि यह बिल्कुल सही है। ये प्रतिबंध यहाँ उन अन्य लोगों के प्रकाश में दिए गए हैं जो एक्सोडस समूह में शामिल हो गए हैं।

यहाँ कुछ अतिरिक्त बातें हैं जो इसके बारे में कहने की ज़रूरत है। इसलिए यदि आप एक विदेशी के रूप में खतना द्वारा संकेतित वाचा के दायित्वों को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, तो आप, वास्तव में, वाचा में शामिल हो रहे हैं, और यह बहुत महत्वपूर्ण है, मुझे लगता है। वाचा जातीय आधार पर नहीं थी।

वाचा केवल अब्राहम के भौतिक वंशजों के लिए नहीं थी। हाँ, यहीं पर मुख्य ध्यान केन्द्रित था, लेकिन जो कोई भी वाचा के दायित्वों को स्वीकार करना चाहता था, वह ऐसा कर सकता था, और यह हमारे लिए सच्चाई का संकेत है कि परमेश्वर केवल अब्राहम के भौतिक वंशजों में ही दिलचस्पी नहीं रखता है। वह दुनिया को वाचा में लाने में दिलचस्पी रखता है, और इसलिए यहाँ इसका प्रमाण है, और जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, यह बढ़ता जाएगा, इसलिए यदि आप यशायाह 56 को देखें, जो पृष्ठ 693, श्लोक 3 पर है, तो कोई भी विदेशी जो यहोवा से बंधा हुआ है, यह न कहे कि यहोवा मुझे अपने लोगों से अवश्य अलग कर देगा।

कोई खोजे शिकायत न करे, मैं एक सूखा पेड़ हूँ। क्योंकि यहोवा यों कहता है, जो खोजे मेरे सब्ब को मानते हैं, जो मुझे पसंद है वही चुनते हैं और मेरी वाचा को थामे रहते हैं, मैं उन्हें अपने मंदिर और उसकी दीवारों के भीतर एक स्मारक और एक ऐसा नाम दूँगा जो बेटों और बेटियों से बेहतर होगा। मैं उन्हें एक ऐसा नाम दूँगा जो हमेशा तक कायम रहेगा।

और जो विदेशी लोग प्रभु से जुड़े हुए हैं, उनकी सेवा करने के लिए, प्रभु के नाम से प्रेम करने के लिए, उनके सेवक होने के लिए, जो सब्त को अपवित्र किए बिना रखेंगे, जो मेरी वाचा को दृढ़ता से थामे रहेंगे, उन्हें मैं अपने पवित्र पर्वत पर लाऊंगा और अपने प्रार्थना के घर में उन्हें आनन्दित करूंगा। उनकी होमबलि और बलिदान मेरी वेदी पर स्वीकार किए जाएंगे, क्योंकि मेरा घर सभी राष्ट्रों के लिए प्रार्थना का घर कहलाएगा। आपको याद होगा कि यही वह भाषा है जिसका उपयोग यीशु ने पवित्र सप्ताह के सोमवार की सुबह मंदिर को साफ करते समय किया था।

मेरा घर सभी राष्ट्रों के लिए प्रार्थना का घर होना चाहिए, लेकिन तुमने इसे लुटेरों का अड्डा बना दिया है। इसलिए, यहाँ यशायाह 56 में, हम इस विचार पर निर्माण कर रहे हैं, और अंततः, पौलुस कह सकता है कि अब्राहम के सच्चे बच्चे वे हैं जो विश्वास से वाचा को स्वीकार करते हैं। इसलिए, आपको यह प्रगति बाइबल में पूरे रास्ते चलती हुई मिल गई है, और यहाँ ये फसह के नियम उस मार्ग पर एक कदम हैं, जिस पर हम आगे बढ़ते हैं।

ठीक है, निर्गमन की ओर वापस आते हैं। एक बार फिर, हमारे पास कुछ चीजें मिली-जुली हैं। अध्याय 13, श्लोक 1 से 16, मुख्य रूप से ज्येष्ठ पुत्र के अभिषेक के बारे में है।

लेकिन इसके बीच में, हमारे पास अखमीरी रोटी के पर्व के बारे में नियम हैं। आयत 3 से 10 वास्तव में ज्येष्ठ पुत्र के बारे में नहीं बल्कि अखमीरी रोटी के पर्व के बारे में हैं। आपको क्या लगता है कि यहाँ क्या हो रहा है? कोई विचार नहीं, ठीक है? आप फिर से बात कर सकते हैं।

अगर वे नहीं करेंगे, तो आप भी ऐसा कर सकते हैं। ठीक है। ठीक है, ठीक है।

यह उनके उद्धार के लिए परमेश्वर का सम्मान करना है। जब वे ऐसा करते हैं, तो उन्हें याद रखना चाहिए। और मुझे लगता है कि यह बात बिल्कुल सही है।

हमारे लिए कुछ खास रस्में निभाने की आदत डालना और यह भूल जाना कि हम उन्हें क्यों करते हैं, बहुत आसान है। भूल जाते हैं कि उनका क्या महत्व है। ठीक है, हम हमेशा ज्येष्ठ पुत्र को पवित्र करते हैं।

और यह कहना ज़रूरी है कि इब्रानियों ने ही अपने पहलौठे बच्चे को परमेश्वर को समर्पित नहीं किया। यह सिर्फ इब्रानियों तक सीमित नहीं है। बहुत से बुतपरस्त राष्ट्रों ने भी ऐसा ही किया।

और इसलिए, यहाँ जो हो रहा है वह यह है कि परमेश्वर कह रहा है, यह मत भूलो कि तुम ऐसा क्यों करते हो। यह अन्य त्यौहारों के लिए भी सच है। फसह के समय, मूर्तिपूजक नया साल मना रहे थे।

और वे उस ईश्वर की कहानी दोहरा रहे हैं जिसने अराजकता को हराया और अराजकता से व्यवस्था लाई। उसी समय जब मूर्तिपूजक ऐसा कर रहे हैं, इब्रानी लोग याद कर रहे हैं कि ईश्वर ने हमें गुलामी से बाहर निकाला है। ईश्वर ने हमें मृत्यु से मुक्ति दिलाई है।

मिथक की कभी न खत्म होने वाली भूमि में नहीं, बल्कि हमारे समय और स्थान में, भगवान ने प्रवेश किया। इसलिए, मुझे लगता है कि रूथ बिल्कुल सही है कि यह उस संदर्भ में है; यह अखमीरी रोटी की दावत के संदर्भ में है जिसे हम याद करते हैं। हमारे पास ज्येष्ठ पुत्र को पवित्र करने का एक बहुत ही अलग कारण है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने हमें बचाया है। यह कहा जा सकता है कि पतझड़ में झोपड़ियों के पर्व के समय, मूर्तिपूजक शराब के देवता बैकस की पूजा कर रहे हैं। और इब्रानियों को पिछले साल के अपने अनजाने पापों को याद करने और उन पर रोने के लिए कहा जाता है।

अनजाने में किया गया पाप, याद रखें, जानबूझकर किया गया पाप नहीं। इसके लिए कोई तय त्यौहार नहीं है, और इसके लिए कोई तय बलिदान नहीं है। इन चीजों से केस-दर-केस आधार पर निपटना होगा।

लेकिन झोपड़ियों के पर्व पर, मूर्तिपूजक नशे में धुत हो रहे हैं, और इब्रानी लोग पिछले साल के अपने अनजाने पापों पर रो रहे हैं। ठीक है, श्लोक 5 और 19 पर ध्यान दें। जब प्रभु तुम्हें कनानियों, हितियों, एमोरियों, हिवियों और यबूसियों के देश में ले जाएगा, वह देश जिसे देने की शपथ उसने तुम्हारे पूर्वजों से ली थी, वह देश जो दूध और शहद से बहता है, तो तुम्हें इस महीने में यह समारोह मनाना चाहिए।

अब, यह दिलचस्प है कि हम आगे की ओर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। पिछले अध्याय में दिए गए नियमों पर ध्यान केंद्रित किया गया था। आप अखमीरी रोटी नहीं खाते क्योंकि परमेश्वर ने आपको बाहर निकाला, और आपके पास रोटी को बढ़ाने का समय नहीं था।

अब, यह तब है जब तुम देश में आओगे। फिर से, श्लोक 9 में, यह पालन तुम्हारे लिए तुम्हारे हाथ पर एक चिन्ह और तुम्हारे माथे पर एक अनुस्मारक की तरह होगा कि यहोवा का नियम तुम्हारे होठों पर होना चाहिए। अब, यहाँ स्मृति है, क्योंकि यहोवा ने तुम्हें अपने शक्तिशाली हाथ से मिस्र से बाहर निकाला।

तुम्हें यह काम परमेश्वर की आज्ञाओं को लिखने के तरीके के रूप में करना है। हम यहाँ वाचा के पास आने वाले हैं। तुम्हारे माथे पर, तुम्हारे हाथ पर।

ये बातें सुदृढ़ीकरण का एक साधन हैं। आपको याद होगा कि व्यवस्थाविवरण में, उन्हें अंदर-बाहर जाते समय दरवाजे की चौखटों पर परमेश्वर की आज्ञाएँ लिखने के लिए कहा गया है ताकि वे उन्हें देख सकें। लेकिन अब, मैं इसे थोड़ा आगे बढ़ाऊँगा।

प्रश्न 3. पहलौठे की बलि और मिस्र में परमेश्वर ने जो किया, उसके बीच क्या संबंध है? मेरा मतलब है, मैं पहलौठे मेमने की बलि क्यों देता हूँ? मेरा मतलब है, परमेश्वर ने मिस्र में पहलौठे को खून के कारण बचा लिया। मुझे यह बलिदान क्यों देना है? बेशक, मैं अपने बेटे की बलि नहीं दे सकता, लेकिन मुझे उसे छुड़ाना है।

मुझे उसे भगवान से वापस खरीदना है। अब ऐसा क्यों है, आपको क्या लगता है? क्या यह इस बात पर वापस जाता है कि यीशु ज्येष्ठ पुत्र है और इसलिए, यीशु सर्वोच्च बलिदान था? सब कुछ। हाँ, हाँ, मुझे लगता है कि यह संभव है।

यह परमेश्वर द्वारा अपने ज्येष्ठ पुत्र के बलिदान की तैयारी का एक तरीका है। हाँ, मुझे ऐसा लगता है। आयत 14 से 16 तक देखें, खास तौर पर आयत 14।

, ज्येष्ठ पुत्र का बलिदान क्या कार्य पूरा करने जा रहा है ? यह एक अनुस्मारक है, हाँ। यह केवल एक अनुस्मारक नहीं है, बल्कि यह एक शिक्षण उपकरण है। पिताजी, हम ऐसा क्यों कर रहे हैं? मैं आपको बताता हूँ, बेटा।

बार-बार। आज हम क्यों जीवित हैं? हमारा देश क्यों आगे बढ़ रहा है? भगवान की कृपा के कारण। और ऐसा करके हम खुद को याद करने के लिए मजबूर करते हैं।

और यही बात यीशु ने ऊपरी कमरे में कही थी। जब भी तुम ऐसा करो, मेरी याद में ऐसा करो। अगर हमें माफ़ कर दिया गया है तो हम बार-बार प्रभु भोज क्यों लेते हैं? यह हमें याद दिलाने के लिए है कि हम किस आधार पर जीते हैं। हमारे इस विश्वास का आधार क्या है? तो, हाँ, खून ने वास्तव में उन्हें ढक दिया था, लेकिन यह उस सच्चाई की निरंतर याद दिलाता है।

इसे मत भूलिए। हम इसी वजह से जीते हैं। तो, यह सब धार्मिक सत्य के लिए इतिहास के महत्व के बारे में क्या कहता है? ऐसे तथ्य हैं जो विश्वास का समर्थन करते हैं।

यह बात बिल्कुल इसके मूल में है। मैं कह सकता हूँ, ठीक है, मुझे विश्वास है कि मैं मृतकों में से जी उठूँगा। और कोई और कहता है, हाँ, और मुझे विश्वास है कि मैं एक हैम सैंडविच हूँ।

एक विश्वास दूसरे विश्वास जितना ही अच्छा है। आह, आह। यीशु मसीह मरे हुएों में से जी उठे।

कब्र खाली है। मेरी पसंदीदा कहानियों में से एक जेरी वाल्स की है, जो सेमिनरी के एक पूर्व प्रोफेसर थे, जिन्होंने अपने प्रारंभिक दर्शनशास्त्र पाठ्यक्रम में एक निश्चित बिंदु पर कहा था, अब, दोस्तों, मान लीजिए, मान लीजिए कि मैं आज यहां किसी ऐसे व्यक्ति को ला सकता हूँ जिसके पास निर्विवाद प्रमाण है कि यीशु मृतकों में से नहीं जी उठे थे। हमारे पास यीशु का शरीर है।

आपमें से कितने लोग अभी भी ईसाई होंगे? और आम तौर पर, आधी क्लास अपने हाथ ऊपर उठाती। और वह लगभग डेस्क पर आकर उनके पास आ जाता। आप क्या सोचते हैं? आप यह सब क्यों कर रहे हैं? यह बेवकूफी है।

यदि वह मृतकों में से नहीं जी उठा, जैसा कि पॉल कहते हैं, तो हम सभी लोगों में सबसे अधिक दयनीय हैं क्योंकि हमने झूठ पर विश्वास किया है। और यह पुनरुत्थान से शुरू नहीं होता है। यह हमारे विश्वास के मूल में वापस जाता है, कम से कम यहाँ तक, यदि आगे नहीं, तो अब्राहम तक।

हां, हम कुछ बातों पर इसलिए विश्वास करते हैं क्योंकि हमारे अपने मानस से बाहर ऐसे सबूत हैं जो इसकी पुष्टि करते हैं। और हमें इसे कभी नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए। यही कारण है कि बाइबल की ऐतिहासिकता का सवाल इतना महत्वपूर्ण है।

यही कारण है कि दुश्मन बाइबल की ऐतिहासिकता को कमतर आंकना अपनी पहली प्राथमिकता बनाता है। लेकिन हम इससे बच नहीं सकते। अगर ये विवरण झूठे हैं, तो हम खुद को धोखा दे रहे हैं।

लेकिन ये झूठे नहीं हैं। ये सच हैं। और इन पर यकीन करने के अच्छे कारण भी हैं।

ठीक है, चलिए आगे बढ़ते हैं। श्लोक 17, जब फिरौन ने लोगों को जाने दिया, तो परमेश्वर ने उन्हें पलिशती देश से होकर जाने वाले मार्ग पर नहीं ले गया, हालाँकि वह छोटा था। आह, हाँ, हम यहाँ हैं।

वे गोशेन में हैं, जो यहीं है। कनान तक पहुँचने का एक छोटा रास्ता तट के ठीक ऊपर है, और यह 11 दिनों की पैदल यात्रा है। अगर यही उद्देश्य होता तो उन्हें कनान तक पहुँचाने का यही आसान तरीका होता।

मैंने इस बारे में बार-बार बात की है, लेकिन मैं इसे फिर से दोहराना चाहता हूँ। उन्हें कनान पहुँचाना प्राथमिक उद्देश्य नहीं है। हमें अगले सप्ताह इस बारे में बात करने का एक और मौका मिलेगा।

मान लीजिए कि परमेश्वर ने उन्हें उस रास्ते पर ले जाया होता। तो क्या नहीं होता? समुद्र पार करना संभव नहीं होता। उन्हें परमेश्वर की पूर्ण अतुलनीयता की वह उल्लेखनीय पुष्टि कभी नहीं मिलती।

वास्तव में, आसान तरीका लंबे समय तक आसान तरीका नहीं होता। यह निश्चित रूप से सबसे अच्छा तरीका नहीं होता। लेकिन देखिए भगवान आगे क्या कहते हैं।

अगर उन्हें युद्ध का सामना करना पड़ता है, तो वे अपना मन बदल सकते हैं और मिस्र लौट सकते हैं। खैर, भगवान उन्हें युद्ध से बचा सकते थे। आपको क्या लगता है कि वह क्यों नहीं चाहते थे कि वे इस समय युद्ध का सामना करें? वे बहुत अनुभवहीन हैं।

बिल्कुल। मुझे खुशी है कि आपने ऐसा कहा क्योंकि मैं आपको अगली बार इसी मुद्दे पर ले जाने वाला था। हाँ, यह युद्ध में अनुभव का सवाल नहीं है।

यह आस्था में अनुभव का सवाल है। प्रभु जानते हैं कि उनके पास पहले से ही बहुत सारी समस्याएं थीं। लेकिन समुद्र पार करने की पुष्टि के बिना, उनके लिए बस अपने हाथ ऊपर उठाना और यह कहना बहुत आसान होगा कि यह सब खत्म हो गया है।

इसमें कोई तुक नहीं है। हाँ, हो सकता है कि वे तम्बू के लिए जो भी चढ़ावा लेकर आए थे, वह सब खो देते। उनके पास बताने के लिए कोई गवाह भी नहीं होता।

यह सही है। उनके पास वह गवाह नहीं होता, जिस पर हम अगले सप्ताह अध्याय 15 में विस्तार से विचार करेंगे। उस समय, वे मिस्र से इतनी दूर थे कि वापस जाना आसान नहीं था।

लेकिन इस सड़क पर, अगर उनका सामना युद्ध से होता तो वे आसानी से वापस जा सकते थे। हाँ। हाँ।

हाँ, हाँ, यह दिलचस्प है।

इस भाग में लगभग तीन बार, हम उन शब्दों को देखते हैं जो हम यहाँ पद 18 के अंत में सुनते हैं। इस्राएली युद्ध के लिए तैयार होकर मिस्र से बाहर निकले। ओह, सच में? अब, शाब्दिक रूप से, यह कहता है कि वे मिस्र से एक सशस्त्र सेना की तरह बाहर निकले।

मुझे लगता है कि इसका मतलब यह नहीं है कि वे युद्ध के लिए तैयार थे। यह मेरा अनुवाद नहीं है। मुझे लगता है कि इसका मतलब यह है कि वे रात में नहीं निकले और किसी को पता नहीं चला कि वे चले गए हैं।

इसका मतलब यह है कि वे बाहर निकल गए। वे सबके सामने बाहर निकल गए। मुझे लगता है कि यही बात है।

लेकिन तीन बार, इसमें कहा गया है कि वे एक सैन्य टुकड़ी की तरह मार्च करते हुए बाहर गए, और मुझे लगता है कि यही बात कही जा रही है। क्या आपके पास कठिन तरीके बनाम आसान तरीके के कुछ अनुभव हैं जिन्हें आप हमारे साथ साझा करना चाहेंगे? खैर, आपके पास हमेशा एक घर बेचने की कहावत होती है। एक घर बेचने की कहावत, हाँ।

हाँ। मेरी पहली स्थिति में, मैं पूरी तरह से अपने आराम क्षेत्र से बाहर था और बिल्कुल भी नहीं था। उस शहर में हज़ारों लोगों को छोड़कर शायद ही कोई सभ्यता हो।

मेरे पड़ोस में हिरणों का झुंड था। मैं एक शहरी लड़का हूँ। मैंने भगवान से प्रार्थना की और कहा, भगवान, मुझे मत भेजो।

यह वह जगह नहीं है जहाँ आप मुझे चाहते हैं। एक मोबाइल होम पार्सोनेज में जहाँ मैं ढाई साल तक रहा, भगवान ने मुझसे कहा, यही वह जगह है जहाँ मैं तुम्हें बुला रहा हूँ। और यह ढाई साल बहुत मुश्किल भरे थे।

लेकिन ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे भगवान मुझे उस अनुभव के बिना आज जहाँ मैं हूँ, वहाँ तक पहुँचा सके। किसी अच्छे शहर की यात्रा के लिए यह अनुभव होना ही चाहिए था।

थोड़ा ज़्यादा वेतन, एक बढ़िया अपार्टमेंट। मैं ऐसी ही स्थिति के बारे में सोचता हूँ, लेकिन अब मैं उन लोगों के बारे में सोचता हूँ जिनसे मैं मिला। ठीक है।

यह भगवान के दिल को दिखाने के लिए एक जबरदस्त आशीर्वाद था कि यह यात्रा सार्थक थी। ठीक है। लोग।

हाँ। कोई और भी है? बोलो। सेमिनरी के बाद जब हमने जापान जाने के लिए आवेदन किया, तो हमें सात साल तक इंतज़ार करना पड़ा।

वहाँ पहुँचने से पहले दो चर्च गुज़रे। वहाँ से निकलने के बाद यह सब देखने लायक था।

हाँ. हाँ. बहुत सी महत्वपूर्ण बातें.

पीछे मुड़कर देखने पर सब कुछ ठीक लगता है। हाँ। यह उन लोगों से दूर जाने के कई साल बाद की बात है जिनके साथ मैं बड़ा हुआ था, और केंटकी में किसी को भी नहीं जानता था।

उस संगठन से बाहर आने के बाद, मैं भगवान से बहुत नाराज़ हो गया। उसने कहा, तुमने मुझे यहाँ क्यों बड़ा होने दिया? और आखिरकार उसने मुझसे कहा, क्योंकि अब मैं तुम्हारा इस्तेमाल कर सकता हूँ। उस संगठन से हज़ारों-हज़ार लोग निकले हैं, और मुझे यह नहीं पता था।

ऐसे अन्य लोग भी हैं जो मेरी मदद करने के लिए आगे आए हैं। अब, हम अन्य लोगों की मदद करते हैं, और मैं अब उस पर पीछे मुड़कर देख सकता हूँ और देख सकता हूँ कि परमेश्वर ने एक उद्देश्य बनाया था। हाँ। हाँ। आमीन। आमीन। आमीन।

तो, परमेश्वर ने उन्हें आसान रास्ता नहीं दिया। इसके बजाय, हमें श्लोक 20 में बताया गया है कि उन्होंने रेगिस्तान के किनारे एताम के पास डेरा डाला।

अध्याय 14 की आयत 2 इस्राएलियों को वापस लौटने और मिगदल और समुद्र के बीच, पीहाहिरोथ के पास डेरा डालने के लिए कहती है। हम उन स्थानों में से किसी को नहीं जानते। वहाँ समुद्र के किनारे, बालज़ाफ़ोन के ठीक सामने डेरा डालना है।

फिरौन को लगेगा कि इस्राएली रेगिस्तान से घिरे हुए देश में उलझन में भटक रहे हैं। इसलिए, ऐसा लगता है कि वे इस रास्ते से निकले थे और ऐसा लग रहा था कि वे यहीं से शुरू कर रहे थे, और फिर, अब, जिस समुद्र को उन्होंने पार किया वह लाल सागर नहीं था। लाल सागर यहाँ नीचे है, और यह 1,200 फीट गहरा है।

वे एक तरफ से नीचे गिर गए होंगे और दूसरी तरफ से हाथों पर हाथ रखकर ऊपर चढ़ना पड़ा होगा। हो सकता है कि उन्होंने यहाँ स्वेज की खाड़ी को पार किया हो, लेकिन बाइबल वास्तव में कहती है कि उन्होंने रीड सागर को पार किया था। हिब्रू बाइबिल, केवल अंत में, देर से भविष्यवाणी अवधि में, लाल सागर को पार करने के बारे में बात करती है।

उस समय तक, हर घटना रीड सागर थी। अब, सेप्टुआर्जेंट, पुराने नियम का यूनानी अनुवाद, शुरू से ही लाल सागर का उपयोग करता है, और यहीं से हमें हमारी अंग्रेजी बाइबल में यह मिलता है। लेकिन हिब्रू पाठ कहता है कि उन्होंने रीड सागर को पार किया।

रीड सागर यहाँ से लेकर अब तक का पूरा क्षेत्र था जहाँ स्वेज नहर है, और यह इन झीलों से भरा हुआ था जिन्हें बिटर लेक्स कहा जाता था। और दिलचस्प बात यह है कि वे ज्वारीय थे। जब यहाँ स्वेज की खाड़ी में ज्वार बढ़ता और घटता था, तो ये झीलें भी ऊपर-नीचे होती थीं, जाहिर है कि पानी भूमिगत बह रहा था, और वे खारे थे।

इसीलिए उन्हें कड़वी झीलें कहा जाता है। इसलिए, आज ज्यादातर लोग, बाइबल पर विश्वास करने वाले ज्यादातर इंजीलवादी, मानते हैं कि शायद उन्होंने जो पार किया वह इन कड़वी झीलों में से एक थी, जो 25 या 30 फ़ीट गहरी थी, जो किसी को भी डूबने के लिए काफी है। तो, यह चमत्कारी था, लेकिन यह मिस्र के राजकुमार या दस आज्ञाओं जैसा नहीं था, जहाँ आपको दोनों तरफ़ 100 फ़ीट पानी की दीवारें खड़ी मिलती हैं।

क्या पानी दोनों तरफ़ से रुका हुआ था? बाइबल यही कहती है। तो यह सब कैसे हुआ, मुझे लगता है, इसका जवाब देना आसान नहीं है, लेकिन साथ ही, बाइबल कहती है कि यह एक चमत्कार था, और यही बात बिल्कुल सही है। क्योंकि उस प्रार्थना के जवाब में, पूरी रात हवा चली, और पानी अलग हो गया, और वे सूखी ज़मीन पर पार हो गए।

ठीक है, हम इसके बारे में थोड़ी देर में और बात करेंगे। हाँ? हाँ? यह झीलों की एक श्रृंखला नहीं है। नहीं, यह झीलों की एक श्रृंखला है, और पूरी चीज़ को रीड सागर कहा जाता है।

यह कहानी को और भी दिलचस्प बनाता है, है न? ज़रूर। हम्म-हम्म, हम्म-हम्म, हम्म-हम्म। हाँ, हाँ।

ठीक है. डॉ. हॉलिसब्रुक . हाँ.

आपने बातचीत कैसे की? क्योंकि मैंने कभी पढ़ा ही नहीं था। हाँ। इसीलिए मैं यहाँ हूँ।

हंसी। आपने यह बात आम जनता से कही, और वे कहेंगे, ठीक है, यह स्पष्ट रूप से वेंडेल के बाद से मेरे द्वारा किए गए हर अनुवाद को छीन रहा है। हाँ, हाँ। तो, यह मेरे लिए एक पूरी तरह से नई अवधारणा है।

हाँ, हाँ। और मुझे नहीं पता कि हम ऐसा करने वाले हैं या नहीं, लेकिन यह सच है। नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता।

मुझे ऐसा नहीं लगता। आप अकेले नहीं हैं। मैंने ऐसा कभी नहीं कहा।

हाँ। मैं यहाँ जो पढ़ रहा था, आपने वही कहा जो आपने प्रस्ताव में कहा था। हाँ।

लेकिन आपने इनका कितना अध्ययन किया है, आपको यह नहीं पता होगा, है न? नहीं। और इससे बहुत बड़ा अंतर आएगा। ओह, बहुत बड़ा अंतर आएगा, हाँ।

सूफ़ का सागर। और सूफ़ हिब्रू शब्द है जिसका अर्थ है नरकट।

हम्म। यही तो हमें कहना है: यह कोई ईख नहीं है; यह समुद्र है। हाँ, हाँ, हाँ।

लेकिन मैं फिर कहता हूँ, इसका मतलब यह नहीं है कि चमत्कारी प्रकृति कम हो गई है। वह पानी इतना गहरा था कि उसमें घोड़े डूब सकते थे, और वह दो भागों में बँट गया। मेरी नज़र में यह एक चमत्कार है।

हाँ। तो, क्या यह संभव है कि झीलों की इस श्रृंखला के साथ वे सूखी ज़मीन पर झीलों के चारों ओर जा सकते थे? बस इतना ही कि उस समय वे खुद को उस झील के नीचे दबा हुआ पाते थे। बिल्कुल।

और भगवान ने इसे विभाजित किया। बिल्कुल सही। मुझे लगता है कि अगर आप इसे बड़े परिप्रेक्ष्य से चित्रित करने जा रहे हैं, तो आप उस तरह की झील की कल्पना कर सकते हैं, और यहाँ वे हैं, और यहाँ उस समय दुनिया की सबसे बड़ी रथ सेना आती है।

जैसा कि मैंने यहाँ नोटों में उल्लेख किया है, उस समय घोड़ा और रथ ही अंतिम हथियार थे। और जहाँ तक हम जानते हैं, मिस्त्रियों के पास उस समय दुनिया की सबसे बड़ी रथ सेना थी। इसलिए वे यहाँ आए, और वे कुछ नहीं कर सके।

वे पीछे हट गए, दोनों तरफ रेगिस्तान, पीछे समुद्र। यह खत्म हो गया है। और स्पष्ट रूप से, पाठ कहता है कि ठीक यही हुआ था, जिसने फिरौन को यह सोचने के लिए प्रोत्साहित किया, अब मेरा मौका है।

वे रेगिस्तान में भटक रहे हैं। उन्हें नहीं पता कि वे कहाँ जा रहे हैं। वे उन झीलों में से किसी एक के पास फँस जाएँगे।

तो, एक तरह से, फिर से, परमेश्वर फिरौन को इस जाल में आमंत्रित कर रहा है। अब, उसने फिरौन की इच्छा के विरुद्ध ऐसा नहीं किया, लेकिन उसने उसे एक ऐसी स्थिति दी जहाँ फिरौन चाहे तो अपने वचन से पीछे हट सकता था, और उसने ऐसा किया। अब फिर से, मुझे कहना होगा, मुझे लगता है कि हम सभी को उस तरह की स्थिति के बारे में पता होना चाहिए।

परमेश्वर किसी को भी बुराई करने के लिए नहीं लुभाता। वह हमें बुराई करने के लिए उकसाना नहीं चाहता। वह हमें ऐसी परिस्थिति में नहीं डालता जहाँ हमें बुराई करनी पड़े, लेकिन वह परिस्थितियों को इस तरह विकसित होने देता है कि अगर हम चाहें तो जाल में फँस सकते हैं।

ठीक है। समय उड़ रहा है। हाँ, हाँ, हाँ।

यह सूखी जमीन दोनों को भी स्पष्ट करता है, यह रेतीला तल बहुत जल्दी सूख जाएगा, लेकिन फिर भी, इसलिए आप इस पर चल सकते हैं, लेकिन यह अभी भी नरम होगा, और यदि आप घोड़ों और रथों को वहां से चलाने की कोशिश करते हैं, तो आप मुसीबत में पड़ जाएंगे। और यह, फिर से, मेरे लिए बहुत दिलचस्प है कि जिस तरह से यह कहा गया है, हाँ, श्लोक 22, इस्राएली अपने दाहिने और बाएं तरफ पानी की दीवार के साथ सूखी जमीन पर समुद्र के माध्यम से चले गए। मिस्रियों ने उनका पीछा किया, और फिरौन के सभी घोड़े और रथ और घुड़सवार समुद्र में उनका पीछा करते रहे।

फिर से, मैं बहुत स्पष्ट रूप से नहीं सोच रहा हूँ, लेकिन अरे, यह अवसर है; हम इसे अभी कर सकते हैं। और इसी संदर्भ में वे ऐसा करते हैं। ठीक है।

उन्हें गलत रास्ते पर ले जाने का एक और कारण श्लोक 4, 14 और चार में है। मैं फिरौन और उसकी सारी सेना के द्वारा अपने लिए महिमा प्राप्त करूंगा, और मिस्रियों को पता चल जाएगा कि मैं यहोवा हूँ। यहाँ हमारी सूची क्रमांक 1 के लिए एक और कारण है।

इसलिए, परमेश्वर उन्हें गलत रास्ते पर ले जाता है, न केवल उन्हें अपनी अच्छाई और महिमा सिखाने के लिए, बल्कि दुश्मन को हराने के लिए भी। ठीक है। प्रश्न संख्या दो, 14 के अंतर्गत, एक से नौ तक, मार्च करने के बारे में है।

अब आइए अध्याय 14 की आयत 10 से 14 पर नज़र डालें। जब फिरौन निकट आया, तो इस्राएलियों ने ऊपर देखा, और देखा कि मिस्री उनके पीछे चल रहे थे। वे डर गए और यहोवा को पुकारने लगे, लेकिन जाहिर है कि वे विश्वास में नहीं थे।

उन्होंने मूसा से कहा, क्या इसलिए कि मिस्र में कब्रें नहीं थीं, इसलिए तुम हमें मरने के लिए रेगिस्तान में ले आए? तुमने हमें मिस्र से बाहर लाकर क्या किया है? क्या हमने मिस्र में तुमसे नहीं कहा था, हमें अकेला छोड़ दो, हम मिस्रियों की सेवा करें? हमारे लिए रेगिस्तान में मरने से बेहतर होता कि हम मिस्रियों की सेवा करते। मूसा ने लोगों को उत्तर दिया, डरो मत। दृढ़ रहो, और तुम देखोगे कि प्रभु आज तुम्हें क्या मुक्ति दिलाएगा। आज तुम जिन मिस्रियों को देखते हो, उन्हें तुम फिर कभी नहीं देख पाओगे।

पाठ से पता चलता है कि परमेश्वर ने उसे यह नहीं बताया है। इससे पहले हमारे पास ऐसा कोई स्थान नहीं है जहाँ परमेश्वर ने मूसा को बताया हो कि वह क्या करने की योजना बना रहा है। इसलिए यहाँ, एक व्यक्ति ने विपत्तियों की सच्चाई सीखी है।

भगवान पर भरोसा किया जा सकता है। वे सभी गड़बड़ में थे। जाहिर है, गड़बड़ निराशाजनक है।

भगवान ने हमें इस स्थिति में इसलिए डाला है क्योंकि किसी न किसी कारण से वह हमें नष्ट करना चाहता है। नहीं, शांत रहो। शांत रहो और देखो कि आज प्रभु तुम्हें क्या उद्धार देगा।

प्रभु आपके लिए लड़ेंगे। आपको बस शांत रहना है। एक व्यक्ति, एक व्यक्ति ने सबक सीखा।

अब, मुझे यकीन है कि ऐसे और भी लोग थे। लेकिन यहाँ लोगों और मूसा के बीच का अंतर बहुत नाटकीय है। ऐसा लगता है कि उन्होंने कुछ भी नहीं सीखा है।

लेकिन मूसा ने ऐसा किया। इसलिए, प्रभु ने कहा, तुम मुझसे क्यों चिल्ला रहे हो? इस्राएलियों से कहो कि वे आगे बढ़ें। अपनी लाठी उठाओ और अपना हाथ समुद्र के ऊपर बढ़ाओ ताकि पानी दो भागों में बँट जाए ताकि इस्राएली सूखी ज़मीन पर समुद्र पार कर सकें।

मैं मिस्रियों के दिलों को कठोर कर दूँगा ताकि वे उनका पीछा करें। और मैं फिरौन और उसकी सारी सेना, रथों और घुड़सवारों के ज़रिए महिमा प्राप्त करूँगा। जब मैं फिरौन, उसके रथों और उसके घुड़सवारों के ज़रिए महिमा प्राप्त करूँगा, तब मिस्रियों को पता चल जाएगा कि मैं यहोवा हूँ।

तो, ऐसे कौन से तरीके हैं जिनसे परमेश्वर हमारे जीवन के माध्यम से महिमा प्राप्त कर सकता है? मुझे लगता है कि आप बिल्कुल सही हैं। बिल्कुल सही। क्या आपके पास कोई और विचार है? परमेश्वर हमारे जीवन के माध्यम से महिमा कैसे प्राप्त कर सकता है? परंपरा या जो अपेक्षित है उसके विरुद्ध जाकर, और आप उस चीज़ के पक्ष में खड़े होते हैं जिसकी अपेक्षा नहीं की जा सकती।

हां हां हां।

हाँ। तुम्हें पता है, मैं सिरैक्यूज़ की उस टी-शर्ट कंपनी के बारे में सोचता हूँ और वे इसे क्या कहते हैं... लेक्सिंगटन। लेक्सिंगटन।

मैं लेक्सिंगटन से 30 मिनट की दूरी पर था। ठीक है, ठीक है। हाँ। वे निश्चित रूप से हैं। वे निश्चित रूप से हैं। हाँ। हाँ। हाँ, काश मुझे कुछ हज़ार टी-शर्ट की ज़रूरत होती। हाँ।

हाँ। ठीक इसी स्थिति में जब उनकी पीठ दीवार से सटी होती है, और ऐसा लगता है कि दुश्मन जीत रहा है, परमेश्वर कहता है, इस स्थिति में, मैं महिमा प्राप्त करने जा रहा हूँ। इसलिए, न केवल जब हम उन कठिन परिस्थितियों में होते हैं, और हम विश्वास करते हैं, बल्कि तब भी जब हम परमेश्वर को हमें उन कठिन परिस्थितियों में डालने की अनुमति देते हैं।

हम उनमें से कुछ के बारे में पहले ही बात कर चुके हैं। मैंने अक्सर कहा है, जब भगवान की कृपा से मैं स्वर्ग पहुंच जाऊंगा, तो मैं उनसे पूछूंगा, कॉलेज प्रेसीडेंसी किस बारे में थी? और फिर भी, मैंने पिछले 30 सालों से छात्रों से कहा है, कैरन और मुझे ईश्वरीय नेतृत्व का हर अनुभव मिला है। पूर्ण अंधकार से, खैर, मुझे लगता है कि हमें यह करना चाहिए, पीठ में अंगूठा लगाने तक।

और कॉलेज प्रेसीडेंसी पीठ में अंगूठा थी। हमें यह करना है। हम दोनों यह जानते थे।

और फिर भी, बहुत कठिन। बहुत कठिन। हाँ।

हाँ, बिलकुल ऐसा ही है। जॉन, अगर आपने अभी तक ऐसा नहीं किया है, तो क्या आप इन समूहों की विशालता के बारे में कुछ बता सकते हैं? हाँ। हज़ारों इस्राएली सूखी ज़मीन पर रीड्स सागर को पार कर रहे हैं, लेकिन फिर भी, शायद सैकड़ों हज़ार हैं, और आपने पहले ही कुछ बता दिया होगा कि कितने हैं।

नहीं, मैंने ऐसा नहीं किया। और पैर, जानवर, गाड़ियाँ और सब कुछ पार जा रहा था। और फिर भी, मिस्र के लोग आ रहे थे, लेकिन वे पार नहीं जा सके।

आप सोच रहे होंगे कि इन सभी को पास होने में कितना समय लगेगा। हाँ, हाँ। मुझे इस बारे में बात करने दीजिए।

जैसा कि मैंने पृष्ठभूमि सामग्री में बताया, इब्रानियों ने संख्याओं का इस्तेमाल हमारे द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले तरीके से बहुत अलग तरीके से किया। हम संख्याओं का इस्तेमाल सिर्फ मात्रा के लिए करते हैं। इब्रानियों ने कभी-कभी इसे इस तरह से इस्तेमाल किया, लेकिन इससे भी ज़्यादा महत्वपूर्ण बात गुणवत्ता थी।

और आप 40 और 12 और 7 जैसी संख्याओं के बारे में सोच सकते हैं जो गुणवत्ता के बारे में संख्याएँ हैं, ज़रूरी नहीं कि मात्रा के बारे में। इसलिए, यह हमें बहुत मुश्किल में डाल सकता है। और रीड सागर को पार करने वाले हिब्रू लोगों की संख्या उनमें से एक है।

जब आप 2.5 मिलियन लोगों के बारे में सोचते हैं, जो कि 600,000 लड़ाकों के होने पर भी उतना ही होगा, तो हम यह नहीं कह रहे हैं कि भगवान क्या कर सकते हैं। यह बात चर्चा में नहीं है। लेकिन सवाल यह है कि भगवान ने क्या किया? और जब आप इसके बारे में सोचना शुरू करते हैं, तो यहाँ की व्यवस्था चौंका देने वाली है।

यदि आपके पास 2.5 मिलियन लोगों का एक स्तंभ है, यदि सामने की ओर एक मील की चौड़ाई है, तो पूँछ लगभग 10 मील पीछे है। इसलिए, यदि आपके पास यहां से विल्मोर तक एक मील की चौड़ाई है, तो 10 मील लंबे लोगों के समूह को पार करने में कितना समय लगेगा? यह कुछ गंभीर समस्याएं पैदा करना शुरू कर देता है। फिर, जब आप 2.5 मिलियन लोगों के शिविर के बारे में सोचते हैं, तो आप 20 वर्ग मील के आसपास के क्षेत्र के बारे में बात कर रहे हैं।

और यह बहुत कम है। तो फिर, क्या बाइबल यही बता रही है? और ऐसा नहीं लगता। अब, इस समस्या को हल करने के लिए कई प्रयास किए गए हैं।

एक संभावित समाधान, और जहाँ तक मेरा सवाल है, इनमें से कोई भी वास्तव में इसका उत्तर नहीं देता है। लेकिन एक संभावना यह है कि हिब्रू भाषा में यीशु के 500 साल बाद तक स्वर नहीं थे। इसे व्यंजनों में लिखा जाता था।

1000 के लिए व्यंजन वह है। यहाँ यह मूक कण्ठस्थ ध्वनि है, बस एक विराम और एक एल और एक पी। 1000 के लिए शब्द एलएफ है। और स्वर के बाद आने वाला पी नरम होता है, जैसे कि एफ। एलएफ।

सेना के लिए शब्द अलग है। व्यंजनात्मक पाठ में ये दोनों शब्द अप्रभेद्य होते। इसलिए, एक सुझाव यह है कि मूल पाठ में 600 सैनिकों की बात कही गई थी, और शायद एक सैनिक की संख्या 100 थी।

मुझे लगता है कि इसमें समस्या यह है कि कई बार इन तीन व्यंजनों का इस्तेमाल 1000 की मात्रा के लिए किया जाता है। और इसलिए आप उनके बीच कैसे अंतर करेंगे, मुझे लगता है, यह एक मुद्दा उठाता है। मुझे लगता है कि एक और संभावना है, और ईमानदारी से, यह वही है जो मुझे सबसे अधिक संभावित लगता है, वह यह है कि, वास्तव में, लोगों की कुल संख्या 600,000 थी।

एक रात में समुद्र पार करने के लिए पचास लाख लोग अभी भी बहुत बड़ी संख्या है। लेकिन यह संभावना के दायरे से बाहर नहीं है, जबकि मुझे लगता है कि 2.5 मिलियन संभावना के दायरे से बाहर है। मुझे नहीं लगता कि आप उन्हें दो दिनों में समुद्र पार करा सकते हैं।

तो ये वो मुद्दे हैं जो पाठ में उठाए गए हैं और मेरे विचार से कभी भी पूरी तरह से उत्तर नहीं देते हैं। लेकिन मैं फिर से कहूंगा, मैं बस इस बात को रेखांकित करना चाहता हूँ: वे संख्याओं का उपयोग उस तरह नहीं करते जैसे हम करते हैं। किसी भी पाठ की व्याख्या करते समय, आपको इसे मूल लेखकों के शब्दों में व्याख्या करना होगा, न कि अपने शब्दों में।

और इसलिए, यह उस संबंध में है। ठीक है, मुझे हाँ कहने दो। सुबह के शुरुआती घंटों में ईश्वर के कार्य करने का प्रतीक क्या है? हमें बताया गया है कि आग और बादल की दीवार ने मिस्रियों को हिब्रू लोगों से अलग कर दिया था, और पूरी रात हवा चलती रही।

फिर, प्रभु ने अपना हाथ समुद्र पर फैलाया। उस पूरी रात प्रभु ने तेज पूर्वी हवा के साथ समुद्र को पीछे धकेला, उसे सूखी भूमि में बदल दिया। पानी दो भागों में बँट गया।

श्लोक 24, रात के आखिरी पहर के दौरान, प्रभु ने आग और बादल के खंभे से मिस्र की सेना को देखा और उसे भ्रम में डाल दिया। सुबह-सुबह परमेश्वर के कार्य करने का क्या महत्व है? यह अंधेरा है। अब, हममें से जो लोग उल्लू हैं, मेरे जैसे, सुबह-सुबह वास्तव में कुछ भी नहीं किया जाता है।

लेकिन भगवान एक उल्लू नहीं बल्कि एक लार्क प्रतीत होते हैं। सुबह-सुबह उठने का क्या महत्व है? यह दिन का एक ऐसा समय है जिसमें बहुत ताकत होती है। हाँ, यह एक नई शुरुआत है।

और क्या? हाँ, पहले वाला पल और बाद वाला पल एकदम विपरीत है। हाँ, वह रात है, यह दिन है। हम्म-हम्म।

ठीक है, ठीक है। इसके लिए बहुत ज़्यादा विश्वास की ज़रूरत थी। हम इन लोगों के विश्वास की कमी के बारे में बात कर सकते हैं, लेकिन फिर भी इस जलाशय की ओर अंधेरे में कदम रखने और यह विश्वास करने के लिए कि हम इसे हासिल कर लेंगे, बहुत ज़्यादा विश्वास की ज़रूरत थी।

भगवान आमतौर पर हमें अंधेरे में कदम उठाने के लिए कहते हैं। वह शायद ही कभी हमें दोपहर के समय काम करने के लिए कहते हैं, जब सब कुछ बिल्कुल साफ होता है। मुझे भी लगता है, और शायद मैं यहाँ अपने अनुभव के बारे में बोल रहा हूँ, मैं सुबह 3 बजे से ज़्यादा दुखद समय नहीं जानता।

हर समस्या का समाधान असंभव है, और यही वह क्षण है जब परमेश्वर कार्य करना चुनता है। यही वह क्षण है जब परमेश्वर कहता है, एक रात के पहरेदार के रूप में, वह 3 बजे का समय वह समय था जब आपको लगता था कि आप कहाँ हैं या कुछ भी नहीं जानते। हाँ, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं।

अगर मैंने यह पहले ही बता दिया है तो मुझे माफ़ करें। जिस गर्मी में कैरन और मेरी शादी हुई थी, मैं पीतल की ढलाई की फैक्ट्री में रात के समय चौकीदार के तौर पर काम करता था, और बहुत सी इमारतें खाली थीं। सुबह 3 बजे उन बड़ी, पुरानी, खाली इमारतों से गुज़रते हुए, हर परछाई एक खतरा लगती थी।

मैं हमेशा अपने 4 बजे के चक्कर के लिए बहुत खुश रहता था क्योंकि मुझे पता था कि जब तक मैं खत्म करूँगा, पूर्वी क्षितिज गुलाबी हो जाएगा। सब ठीक होने वाला था। हाँ, हाँ, हाँ।

अध्याय 4, श्लोक 30 और 31 को देखें। हारून और मूसा प्रकट हुए; उन्होंने चिन्ह दिखाए, श्लोक 31, और उन्होंने विश्वास किया। और जब उन्होंने सुना कि प्रभु उनके बारे में चिंतित है और उन्होंने उनकी दुर्दशा देखी है, तो उन्होंने सिर झुकाया और पूजा की।

ओह-हह। अब, अध्याय 6, श्लोक 8 और 9। परमेश्वर ने पिछले श्लोकों में कहा है, मैं यहोवा हूँ, मैं तुम्हें मिस्रियों के जुए से बाहर निकालूँगा, मैं तुम्हें दास होने से मुक्त करूँगा, मैं तुम्हें अपने लोगों के रूप में अपनाऊँगा, इत्यादि। मूसा ने इस्राएलियों को यह बताया, लेकिन उन्होंने अपनी निराशा और कठिन परिश्रम के कारण उसकी बात नहीं सुनी।

अब अध्याय 14 की आयत 31 पर नज़र डालें। जब इस्राएलियों ने मिस्रियों के विरुद्ध प्रभु के शक्तिशाली हाथ को देखा, तो लोगों ने प्रभु का भय माना और उन पर और उनके सेवक मूसा पर भरोसा किया। उन्होंने अपनी परिस्थितियों को अपने मन के अनुसार तय करने दिया।

हाँ। ओह, मूसा, हारून, यह बहुत अच्छी खबर है। हाँ, हम प्रभु से प्यार करते हैं, हम उनकी आज्ञा मानेंगे, हम उनका अनुसरण तब तक करेंगे जब तक कि फिरौन हमें भूसा दिए बिना ईंटें बनाने के लिए मजबूर न कर दे।

ओह, प्रभु अद्भुत है। उसने हमें बचाया है, और वह हमें लाल सागर के पार ले गया है। हाँ, हम प्रभु पर भरोसा करते हैं; हम मूसा पर भरोसा करते हैं जब तक कि पानी खत्म न हो जाए।

तो, इसका हमसे क्या संबंध है? यह हमें क्या बताता है? देखिए, विश्वास करना है। जब तक वे देख सकते थे और जान सकते थे कि भगवान ने उनके लिए क्या रखा है, जैसा कि आपने कहा, उन्होंने भगवान की स्तुति की और पूजा की, लेकिन फिर जब उन्होंने यह नहीं देखा, जब उनके पास कुछ

होने का ठोस सबूत नहीं था, तब उन्होंने विश्वास नहीं किया। और वे बुदबुदाने और बड़बड़ाने लगे।

हाँ। विश्वास को जीतना ही होगा। आगे बढ़ो।

विश्वास को परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। विश्वास को परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए, हाँ। मैं बस यह कहने जा रहा था कि यह वैसा ही है जैसे आपने थॉमस और आपके आशीर्वाद पर चर्चा की।

हाँ, हाँ, हाँ। मुझे लगता है कि इसमें कुछ सच्चाई है। इसमें कुछ सच्चाई है।

हम गोल्डन काफ घटना में इसकी अभिव्यक्ति देखेंगे। हाँ, हाँ। तो, मुझे लगता है कि यह एक महत्वपूर्ण... क्या हमारा विश्वास वास्तव में मानव नेताओं में है? कभी-कभी मुझे लगता है कि हमारा विश्वास... अगर हमारे पास बहुत सारे विकल्प हैं, तो हमारा विश्वास डगमगाने लगता है।

आप पूछते हैं कि इस्राएली कैसे कर सकते थे या उन्हें झील में उतरने के लिए किस तरह के विश्वास की ज़रूरत थी। उनके पास कोई विकल्प नहीं बचा था। हाँ। उनके पास कोई विकल्प नहीं बचा था।

कोई विकल्प नहीं था। और मुझे लगता है कि हमारे पास जितने ज़्यादा विकल्प होते हैं, कभी-कभी हमारा विश्वास उतना ही कम होता है। हाँ, हाँ।

मैं चक वैगन गैंग के बारे में सोच रहा था। मुझे नहीं पता कि आपने कभी उनके बारे में सुना है या नहीं। कई साल पहले, यह पश्चिमी देशों की तरह था... मैं इसके लिए बहुत छोटा हूँ।

पश्चिमी गॉस्पेल जैसी चीज़। और उनके पास एक गाना था जिसमें कहा गया था... और मुझे याद है कि यह हमेशा भयानक होता था। मुझे आश्चर्य है कि क्या यह... निस्संदेह हुआ।

वह हमें कोनों में धकेल देता है। या फिर हमें उसे खोलना पड़ता है। हाँ।

लेकिन यह पूरा मुद्दा... क्या मेरा विश्वास सुखद परिस्थितियों का परिणाम है? क्या मेरा विश्वास किसी मानव नेता का परिणाम है? क्या मेरा विश्वास... किसी अन्य विकल्प का परिणाम है। क्या मेरा विश्वास... विश्वास है। या यह कुछ और है? विश्वास से काफी कम कुछ। और यह हमारे लिए एक चुनौती है, मुझे लगता है।

आइए प्रार्थना करें। प्रभु यीशु, आपका धन्यवाद कि आप आए हैं। क्रूस पर मरने और मृतकों में से जी उठने के लिए आपका धन्यवाद। हमें क्षमा करें, प्रभु, जब हम इस्राएलियों की तरह होते हैं। जब हम आप पर विश्वास करने के लिए तैयार होते हैं, जब सब कुछ ठीक होता है, और भविष्य स्पष्ट होता है।

और फिर भी जब चीजें गलत होती हैं तो हम बहुत आसानी से बहक जाते हैं। आपका धन्यवाद कि आप हमें जानते हैं। हमें बहुत अच्छी तरह जानते हैं। और फिर भी हमारे साथ धैर्य रखें। फिर भी, हम तक पहुँचें। हमारी परवाह करें। हमें आगे बढ़ाएँ। हे ईश्वर, हमारे विश्वास को और गहरा करें। इसे दृढ़ करें। इसे अपने में सुरक्षित करें। धन्यवाद। आपके नाम में, आमीन।

यह डॉ. जॉन ओसवाल्ट द्वारा निर्गमन की पुस्तक पर दिया गया उपदेश है। यह सत्र 7, निर्गमन 12-14 है।